श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१

सम्यग्ज्ञान विशारद

Answer-Sheet

अभ्यासक्रम क्रं. : १०

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर 10

शहर ____________

विद्यार्थी का नाम ____________

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	युगप्रधान
(२)	एरंडफल
(३)	जिनहंस मुनि
(४)	आत्मा
(५)	व्यंतर देव
(६)	आत्मवैभव
(७)	पुरश्चर्या
(८)	महाप्राणायम को
(९)	मलावलंबी
(१०)	उत्कृष्टसुख
(११)	लीलाधर
(१२)	चिदानंदमय
(१३)	नागजी
(१४)	आत्मप्रदेशों
(१५)	श्री जिनेश्वर देव का पूजन
(१६)	उल्टे श्वेत छत्र
(१७)	घ्राणेन्द्रिय
(१८)	धर्मास्तिकाय
(१९)	इंद्रियों का स्वामी
(२०)	महान पुण्य

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	पद्मसिंहशाह
(२)	सिद्ध भगवंत
(३)	जामनगर
(४)	कुरगडु
(५)	उपसर्ग
(६)	अल्पबहुत्व
(७)	श्रोतेन्द्रिय
(८)	अभक्ष्य
(९)	उगते सूर्य
(१०)	मन, वचन, काया योग
(११)	स्थूलिभद्र
(१२)	बाहुबली
(१३)	वाचक विनयसागर
(१४)	मद
(१५)	मुजाह

(५)	तरह स्रवित
(६)	गति
(७)	नामक
(८)	इंद्र
(९)	ग्रंथरूपी समुद्र से
(१०)	ऊपर कहे अनुसार
(११)	भेद
(१२)	विराम
(१३)	तिरछी गति
(१४)	सूक्ष्म
(१५)	निश्चित
(१६)	अधिक
(१७)	शिष्य
(१८)	भवनपति
(१९)	पाते हैं
(२०)	सुलभ

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	कुंभार
(२)	आत्महित
(३)	मलावलंबी
(४)	मोक्षपद

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	१०	(६)	१
(२)	९	(७)	~~२~~ ४
(३)	७	(८)	५
(४)	६	(९)	२
(५)	८	(१०)	३

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	302
(२)	४५ लाख
(३)	५०००
(४)	९८
(५)	२४
(६)	४
(७)	८
(८)	१९
(९)	~~५~~९३
(१०)	५०००

	प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	✓	(१)	१८
(२)	×	(२)	४
(३)	×	(३)	३
(४)	✓	(४)	७
(५)	✓	(५)	१५
(६)	~~✓~~	(६)	२२
(७)	✓	(७)	१५
(८)	×	(८)	९
(९)	✓	(९)	५
(१०)	×	(१०)	१९

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	कुल गुण
+	+	+	+	+	+	+	=	

रीमार्क ____________ जांचनेवाले की सही ____________

प्रश्न - ८

१. किन जीवों की संख्या कम, किन जीवों की उनसे अधिक इसकी जानकारी जीवों का 'अल्पबहुत्व' कहलाती है। इसका सूक्ष्मता से गहराई से विचार करे तो खयाल आता है की इस विश्व में रहे हुये सब प्रकार के जीवों में से अल्प संख्या में मनुष्य है, इससे यह खयाल में आता है की मानवभव कितना दुर्लभ है। वैमानिक देव भी मनुष्य से असंख्यात गुणा अधिक है। ऐसे दुर्लभ मानव-भव की प्राप्ती प्राप्ति महान पुण्ययोग से हुई है। अन्य सब भव इस जीव ने अनंतबार प्राप्त किये है। अब इन भवो को प्राप्त न करते अभी प्राप्त मानवभव की सुंदर आराधना कर भवभ्रमण को मर्यादित करदेना चाहिए। इस दुर्लभ मानवभव से ही मोक्षप्राप्ती याने की अक्षय सुख प्राप्त होता है। अच्छी से अच्छी आराधना करके जल्द से मोक्ष प्राप्त हो जाये ऐसी भावना रखते है।

२. एकेंद्रिय से लेकर पंचेंद्रिय जीवों में ऐसा दिखता है की, हर एक जीव को इन्द्रियो की सुख लालसा पछाड़ रही है। एकेन्द्रिय जीव में सिर्फ स्पर्शेन्द्रिय होता है। जैसे जैसे इंद्रिय बढ़ते है, वैसे लालसाये बढ़कर जीव को बुरी तरह हालत बनाते है। हाथी जैसा बलवान प्राणी स्पर्शेन्द्रिय के वश होने से स्वयं को बंधनग्रस्त बनाता है। इसके बाद जो रसनेन्द्रिय याने की जीभ आती है, उसकी गुलामी से बेइन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के सब प्राणी पकड़ जाते है। फिर आता है घ्राणेन्द्रिय - नाक। इसके कारण, इसकी गुलामी के कारण हमारे जीव ने मरण की वेदना अनंत बार भोगी है। e.g- भ्रमर। इसके बाद - आँख - चक्षुरिन्द्रिय। इसकी गुलामी से पतंगा, और ऐसे छोटे जीव मर जाते है। आखिरे इन्द्रिय श्रोतेन्द्रिय। इसकी गुलामी से हिरण, सर्प, नाग-नागिन फस के पकड़ जाते है। ये सब सुख का आभास है।

३. तप करने से जो अभिमान आता है, उसे तपमद कहते है। दुष्कर तप करनेवाले तपस्वी अनेक कर्मो को जलाकर राख कर देते है, परयदि इस तप का अभिमान आजाये तो तपमद के कारण उसका फल वे तपस्वी नहीं ले पाते। कुरगडु मुनि के साथी मुनिवरों को तप का अभिमान हो गया था - वो इस तरह - संवत्सरि के पर्व पर छोटे बड़े सब तप कर रहे थे, किसी के छः महिने के उपवास, किसी के पांच महिने की तपस्या (उपवास), किसी के चार महिने के उपवास, किसी के तीन मासी, किसी के दो मासी, मास क्षमण। पर कुरगडु मुनि को क्षुधावेदनीय कर्म के उदय से कुछ उनका तप नहीं था, उन्होंने गोचरी में जाकर, दुःख से गोचरी वापरने के लिए बैठे, बाकी तपस्वियोंने उन्हे तिरस्कृत किया, उनको तपमद हो गया था। पर भारी पश्चाताप के कारण कुरगडु मुनी को केवलज्ञान हो गया।

४. पू कल्याणसागरसूरि ने सम्राट जहांगीर को एक चमत्कार बताया था। वो ऐसा - मंत्री बंधु कुरपाल - सोनपाल ने आगरा में दो जिनालय बंधवाये। किसी ने सम्राट जहांगीर के कान भराये। तब सम्राट ने हुकूम किया की यदि इस मंदिर में प्रतिमाये चमत्कार न दिखाये तो ये मंदिर का विध्वंस करने में आयेगा। पू कल्याणसागरसूरि ने सम्राट जहांगीर को प्रतिमा को वंदन करने के लिये कहा। सम्राट ने प्रतिमा को वंदन करने पर पाषाण प्रतिमा ने एक हाथ ऊपर करके सम्राट को उच्च स्वर में धर्मलाभ दिया। इस चमत्कार से सम्राट खुश हो गया। उसने दरबार सुवर्ण मुद्रिकाये सूरि के चरणों में धरी।

५. कर्मरहित सिद्ध भगवंतों की एक समय में उर्ध्वगति होती है। जिस तरह कुंभार का चक्र, गुलेल से निकला हुआ पत्थर इन सबकी गति जिस तरह पूर्वप्रयोग से होती है उसी तरह सिद्ध परमात्मा की गति भी पूर्वप्रयोग से होती है। एरंडफल के बीज समान बंध छेदसे सिद्ध परमात्मा की उर्ध्वगति होती है। जब कर्म के बंधन टूट जाते है तब सिद्ध भगवंतो की उर्ध्वगति होती है। सिद्धों की उर्ध्वगति बतायी है, सिद्ध जीव नीचे अथवा तिरछी गति नहीं करते, इसका कारण ऐसा है की, कोई भी वस्तु भारी वजनवाली होती है, तो वह नीचे ही गिरेगी। और सिद्ध के जीव तो कर्मगुरुता रहित होते है, हलके है। इसलिए नीचे नहीं गिरते। नीचे गति नहीं करते। उसी तरह